बुद्धपूजा

वण्ण- गन्ध- गुणोपेतं एतं कुसुमसन्ततिं ।
पूजयामि मुनिन्दस्स, सिरीपाद सरोरूहे ।१ ।
पूजेमि बुद्धं कुसुमेन नेन पुञ्ञेन मेत्तेन लभामि मोक्खं ।
पुप्फं मिलायति यथा इदं मे,
कायो तथा याति विनासभावं ।२ ।
घनसारप्पदित्तेन, दीपेन तम धंसिना ।
तिलोक दीपं सम्बुद्धं पूजयामि तमोनुदं ।३ ।
सुगन्धि काय - वदनं, अनन्त - गुण - गन्धिना ।
सुगंधिना, हं गन्धेन, पूजयामि तथागतं ।४ ।
बुद्धं धम्मं च संघं सुगततनुभवा धातवो धातुगब्भे ।
लंकायं जम्बुदीपे तिदसपुरवरे नागलोके च थूपे ।५ ।
सब्बे बुद्धस्स बिम्बे सकलदसदिसे केसलोमादिधातुं वन्दे ।
सब्बेपि बुद्धं दसबलतनुजं बोधिचेत्तियं नमामि ।६ ।
वन्दामि चेतियं सब्बं सब्बट्ठानेसु पतिट्ठितं
सारीरिक- धातु महाबोधिं बुद्धरूपं सकलं सदा ।७ ।

बुद्धपूजा

इस वर्ण और गन्ध ऐसे गुणों से युक्त इन पुष्पों से गूंथी हुई मालाओं द्वारा मैं भगवान बुद्ध के कमलवत श्री चरणों की पूजा करता हूँ ॥१ ॥

इन कुसमों (पुष्पों) से मैं बुद्ध की पूजा करता हूँ, इस पुण्य से मुझे निर्वाण प्राप्त होगा । जिस प्रकार यह फूल कुम्हलाता है उसी प्रकार मेरा शरीर भी विनाश को प्राप्त होता है ॥२ ॥

अन्धकार को नष्ट करने वाले जलते हुए दीप के समान मैं तीनो लोकों के प्रदीप तुल्य अज्ञान-अन्धकार को नष्ट करने वाले भगवान बुद्ध की पूजा करता हूँ ॥३ ॥

मैं सुगन्धियुक्त शरीर एवम् मुखवाले, अनन्त गुण युक्त सुगन्धि से तथागत की (सुगन्धि की गन्ध से) पूजा करता हूँ ॥४ ॥

बुद्ध, धम्म तथा संघ एवम् श्री लंका, जम्बुदीप, नागलोक और त्रिदसपूर में स्थित स्तूपों में भगवान बुद्ध के शरीर के जितने भी अवशेष स्थापित हैं, उन सबको मै प्रणाम करता हूँ ॥५ ॥

सर्व दस दिशाओं मे व्याप्त बुध्द के केश, लोम आदि अवशेषों के जितने भी रूप हैं उन सबको, सब बुध्दों को, दसबलतनुजों को और बोधिचैत्यों को मैं नमस्कार करता हूँ ॥६ ॥

सभी स्थानों में प्रतिष्ठित चैत्य, बुद्ध, शरीर के अवशेष, महाबोधिवृक्ष और बुद्ध प्रतिमाओं की सदा वन्दना करता हूँ ॥७ ॥

Buddha Puja (Pali)

vannagandha-gunopetam - etam kusuma-santati(m)
pujayami munindassa - siripada-saroruhe.

pujemi buddham kusumena'nena
punnenametena labhami mokkham
puppham milayati yatha idamme
kayo tatha yati vinasabhavam

ghanasarappadittena-dipena tamadamsina
tiloka-dipam sambuddham-pujayami tamonudam

sugandhikaya vadanam - anantaguna-gandhina
sugandhina'ham gandhena - pujayami tathagatam

buddham dhammam ca sangham sugatatanubhava
dhatavo dhatugabbhe
lankayam jambudipe tidasapuravare
nagaloke ca thupe

sabbe buddhassa bimbe sakaladasadise
kesa lomadi dhatu vande
sabbe pi buddham dasabalatanujam
bodhicetiyam namami

vandami cetiyam sabbam - sabbatthanesu patitthitam
saririka-dhatu-maha-bodhi(m) - buddharupam sakalam sada

Buddha Puja (English)

This spread of flowers, fresh-hued and fragrant,
I offer at the sacred lotus Feet of the Noble Sage.

With flowers in great variety, the Buddha I adore
And by this merit may I gain release.
Even as these flowers must fade,
my body too will pass away.

With lights brightly shining, dispelling the gloom,
I honour the Fully-Awakened, that Light of the Triple World,
Who dispels the gloom (of ignorance).

Perfumed with infinite qualities, the Tathagatha,
fragrant of face and form, I revere with incense,
sweet and penetrating.

To the Buddha, the Dhamma, the Sangha,
in the relics of His body,
enshrined at Lanka, Jambudvipa, Nagaloka
and the Heaven of the Thirty(-three) - in stupas there:
I give honour.

To all the images of Buddha, in all ten directions,
to even hairs and other relics, I give honour.
To the Ten Powers of the Buddha,
to the Cairn of Bodhi, I give honour.

Greetings every stupa, that may stand in any place,
The relics, the Great Bodhi, and Buddha forms everywhere!